नाम क्या लिखोगे

—ऐश

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Ash 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-033-0

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: April 2026

दिल की धड़कनों का, बयां जब लिखोगे
आँसुओं में डुबो कर कलम - जब लिखोगे

पढ़ने आऊँगा, हाल-ए-बयां जब लिखोगे
अपना ज़िक्र करोगे? उन ज़ालिमों के साथ

मेरे कातिलों में, नाम अपना लिखोगे?

मैंने सुना तुम, लिखने लगे हो 'ऐश',
किताब जब लिखोगे, **नाम क्या लिखोगे?**

शोर के बीच एक खामोश दस्तक

एक किताब सिर्फ कागज़ों का पुलिंदा नहीं होती; एक अदृश्य पुल होती है, जहाँ लेखक की नीयत (Intent) और पाठक की ज़रूरत आपस में आकर मिलते हैं। और यह अपेक्षा का सेतु जहां मिलता हैं वहां भावनाएं शब्द बन जाती हैं और शब्द अभिव्यक्ति का माध्यम। बस यही है सृजन और कहने की क्षमता।

तो चलिए, इस सफर की शुरुआत करते हैं। जहाँ शब्द रोमांचक होंगे, अर्थ गहरा होगा।

कुछ तो लोग कहेंगे

आशुतोष जैसा कि नाम है आशु रचना में प्रखर हैं। इनके भीतर से उठने वाली भावनाएं मानों ठहरे हुए पानी को अपने वेग और प्रहार से चंचल कर देती हैं। कवि के भावों की रेंज भी इतनी ही इंटेस है। दूर तक चली गई है। समेटने में वक्त लगता है किंतु मन में उतरते चली जाती हैं। कुछ पंक्तियां तो मानों महफिलों और चर्चाओं में दोहराने के लिए डायरी में लिखना लाजिमी है। प्रथम प्रयास इतना सधा हुआ है तो भविष्य भी उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। हमें इनकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी। शुभकामनाओं सहित

— **प्रतिभा शर्मा**

"शब्दों और मौन का एक ऐसा जादुई तालमेल, जो सीधे रूह में उतर जाता है। अशुतोष ने जटिल अनुभवों को इतनी सादगी से पिरोया है कि पाठक इसमें अपनी ही कहानी ढूँढ लेता है।"

— **अंकिता सिंह**

"यह काव्य संग्रह मानवीय व्यवहार के उन गुप्त प्रतीकों को उजागर करता है जिन्हें हम अक्सर 'सादा' समझकर छोड़ देते हैं। अशुतोष की लेखनी में वह सामर्थ्य है जो पाठक के भीतर के 'मौन' को संवाद में बदल दे।"

— **सर्वेश चंद (Director MGE)**

"अशुतोष की जितनी गहरी पकड़ उनकी 'फाइनेंस' के गणित और 'इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी' के एल्गोरिदम पर है, उतनी ही बारीक समझ उनके पास शब्दों के 'अलंकारों' और मानवीय व्यवहार के 'छंदों' की है।"

— **अरुण चौहान (लेखक, AI Transformation Blueprint)**

पाठकीय अनुभव

यह काव्य-संग्रह संवेदना, आत्मचिंतन और दर्शन का एक सधा हुआ संगम है।

शब्दों की सादगी में गहराई है और प्रतीकों में जीवन का यथार्थ झलकता है। हर कविता एक स्वतंत्र संवाद सी लगती है। पाठक का मन रचनाओं को पढ़ते हुए बार-बार यह अनुभव करता है कि कवि केवल लिख नहीं रहा, बल्कि पाठक को उसके भीतर के प्रश्नों से परिचित करा रहा है।

"ज़ेन-जी संवाद" इस संग्रह का आधुनिक स्वर है।यह कविता पुस्तक का समापन नहीं करती, बल्कि अगली पीढ़ी से एक खुली बातचीत शुरू करती है।यहीं शब्द बदलते हैं, और यह संग्रह भविष्य की ओर देखना शुरू करता है।

विजया शर्मा

लेखक परिचय: अशुतोष 'ऐश'

अशुतोष, जिन्हें साहित्य की दुनिया में **'ऐश'** के नाम से जाना जाता है, एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो बाहरी जगत के निर्माण और आंतरिक जगत की खोज के बीच संतुलन बनाना जानते हैं। वे एक बहुआयामी उद्यमी हैं जिन्होंने **फिनटेक (Fintech)**, **रिसर्च मैनेजमेंट** और **इंफॉर्मेशन सर्विसेज़** जैसे जटिल क्षेत्रों में सफल वेंचर्स की स्थापना की है।

व्यावसायिक व्यस्तताओं के बीच, उनका मन हमेशा मानवीय व्यवहार और आत्म-विकास के रहस्यों को टटोलता रहा है। अपनी पहल **'Blookmark'** के माध्यम से वे मनोविज्ञान (Psychology) और व्यक्तिगत विकास (Personal Growth) के संगम पर काम कर रहे हैं, जिसका गहरा प्रभाव उनकी लेखनी में भी झलकता है।

अशुतोष के लिए कविता केवल भावनाओं का प्रवाह नहीं, बल्कि **'अनुभवों का मनश्चीरण'** है। वे भारतीय दर्शन के उन रहस्यों को शब्दों में पिरोते हैं, जहाँ 'आवेग' और 'शीतलता' का मिलन होता है। उनकी शायरी उन लोगों के लिए एक आईना है जो जीवन के 'कुरुक्षेत्र' में अपनी पहचान की तलाश कर रहे हैं।

आभार

इस पुस्तक “नाम क्या लिखोगे” के सृजन में शुभचिंतकों और प्रियजनों का अवस्मिरणीय सहयोग और योगदान रहा है।

मैं विशेष रूप से विजया शर्मा का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के संपादन, प्रूफरीडिंग और इसकी साहित्यिक गुणवत्ता को निखारने में अमूल्य योगदान दिया। उनकी प्रतिबद्धता, ऊर्जा और सूक्ष्म दृष्टि के बिना यह कृति अपने वर्तमान रूप में संभव नहीं हो पाती।

मैं अपने भाई — विश्वनाथ का भी विशेष धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को लिखने के मेरे प्रारंभिक विचार को न केवल प्रोत्साहित किया, बल्कि उसे सुदृढ़ विश्वास और दिशा भी दी।

साथ ही, Blookmark की डिजिटल मार्केटिंग टीम के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिसका नेतृत्व सुवर्णा शर्मा कर रही हैं। यह टीम इस पुस्तक को अनेक माध्यमों और मंचों के द्वारा पाठकों तक पहुँचाने का कार्य कर रही है—उसे जीवित संवाद में बदल रही है, और उसे उस संसार तक ले जा रही है, जहाँ विचारों को सुना और साझा किया जाता है।

अंत में, BlueRose One का आभार, जिन्होंने इन विचारों और अनुभूतियों को पुस्तक के रूप में आकार देकर उसे पाठकों की शेल्फ़ तक पहुँचाने में सहयोग दिया।

यह पुस्तक जितनी मेरी है, उतनी ही उन सभी की भी है, जिनके विश्वास, श्रम और समर्थन से यह संभव हो सकी।

अनुक्रमणिका

भाग – १ : अंतर्द्वंद्व–जटिल भावनाओं' के सबसे करीब का संघर्ष। 1

भाग – २ : अक्स.. 22

भाग – ३ : दरिया– पंजाब की नदियों के प्रवाह को समर्पित। 45

भाग – ४ : कतरा–कतरा–बिखरी हुई यादें या बातें। 50

भाग – ५ : छोटी–छोटी बातें। 62

भाग –१ :
अंतर्द्वंद्व–जटिल भावनाओं के सबसे करीब का संघर्ष !

वृक्ष

यह कविता केवल एक वृक्ष की नहीं, हमारे **आंतरिक स्तंभ** की कहानी है।

अस्तित्व का सार: वृक्ष का 'विशाल' होना उसकी बाहरी पहचान है, लेकिन उसकी असली शक्ति 'पाताल' तक गहरी उन जड़ों में है, जो उसे आंधियों में भी 'तटस्थ' (Stoic) रखती हैं। यह हमारे उन **मूल्यों (Values)** का प्रतीक है जो दुनिया को नहीं दिखते, पर हमें गिरने नहीं देते।

रिक्तता का बोध: जब रक्षक (Protector) हट जाता है, तो वरदान देने वाले बादल भी 'आक्रोश' बन जाते हैं। बिना किसी मज़बूत साये के, जीवन की सामान्य चुनौतियाँ भी प्रहार लगने लगती हैं। हम अक्सर किसी शक्ति की 'बेमिसाल' कीमत उसके **न रहने** पर ही समझ पाते हैं।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**
भुजदंड	मज़बूत भुजाएँ
तटस्थ	निष्पक्ष, अडिग
विकराल	भयानक, विशाल
भाद्रपद	एक महीना
मेघपुष्प	बादल रूपी फूल
तृण	घास, तिनका
गोचर	दृश्य, गतिमान
अंबुद	बादल
आक्रोश	तीव्र क्रोध
सायादार	छाया देने वाला
ऋण	कर्ज, उपकार
विडंबना	विरोधाभास

वृक्ष

एक वृक्ष था विशाल-सा कुदरत के एक कमाल-सा

पाताल तक लिए जडें और लिए भुजदंड अनंत
तटस्थ सदियों से रहा निहारता चक्र काल का
एक वृक्ष था विशाल-सा कुदरत के मायाजाल-सा

न आंधियों से डरा हुआ न धूप से थका हुआ
था माँ का आँचल जो सूरज तपे
चांदनी रात में लगता जिन्न विकराल-सा
एक वृक्ष था विशाल-स, कुदरत के मायाजाल-सा

भाद्रपद में अंबर जब मेघपुष्प बाण चलाते थे
सहज भूमि तले रहता थामे तृण का जाल सा
गोचर (धरती संग) सदियों से रहा कुदरत का जो विसाल था
एक वृक्ष था विशाल-सा कुदरत के मायाजाल-सा

फिर नहीं रहा जो विशाल था कुदरत का जो कमाल था

जो वृक्ष नहीं तो तृण नहीं कह-कह कर अंबुद आक्रोश दिखाता है
धरती को पीटे जाता है
सायादार नहीं तो तृण नहीं मुझ पर धरती का कोई ऋण नहीं
कहो कहां गया जो कमाल था वो वृक्ष जो विशाल था

जो सजीव था निरजीव है ये विडंबना भी अजीब है
जो सदियों पुराना बाग था वो वृक्ष का ही तो ख्वाब था
अब नहीं रहा तो पता चला वो कितना बेमिसाल था
वो वृक्ष कितना विशाल था

क्षणभंगुर विवशताएँ

यह कविता बाहरी बाधाओं की हार और **आंतरिक इच्छाशक्ति** की विजय का घोषणापत्र है।

क्षणिक बनाम शाश्वत: जीवन की विवशताएँ 'क्षणभंगुर' (transient) हैं—वे आती-जाती रहती हैं। जैसे बादल सूर्य की किरणों को केवल कुछ पल के लिए ओझल कर सकते हैं, उन्हें समाप्त नहीं कर सकते; वैसे ही बाहरी कठिनाइयाँ हमारे आत्म-प्रकाश को रोक नहीं सकतीं।

संतुलन की शक्ति: 'आवेग' और 'शीतलता' का विरोधाभास ही वह गहराई है जो हमें सागर जैसा बनाती है। जब हमारा 'प्रण' (vow) हमारे 'प्राण' से अधिक मूल्यवान हो जाता है, तब चंचल लहरें हमें झकझोर तो सकती हैं, पर दिशा भ्रमित नहीं कर सकतीं।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
क्षणभंगुर	पल में नष्ट होने वाला	Momentary
विवशताएँ	मजबूर परिस्थितियाँ	Constraints
भानु	सूर्य	Sun
विकिरण	ऊर्जा की किरणें	Radiation
प्रचंड	अत्यंत तीव्र	Intense
प्रतिरोध	विरोध करने की शक्ति	Resistance

क्षणभंगुर विवशताएँ

क्षणभंगुर विवशताएँ, मुझको रोक नहीं सकतीं ।
कितनी हो कठिनाई, रस्ता टोक नहीं सकती।।

भानु से उत्पन्न हुई विकिरणों को, कोई बदली रोक नहीं सकती।
कितनी प्रचंड हो असुविधा, प्रतिरोध मेरा नहीं कर सकती।।

बहते जल की धारा हूँ, नदिया-समेटे वो किनारा हूँ।
हूँ प्रण, जो प्राण से प्यारा हूँ
लहरें चाहे चंचल हों, मुझको झकझोर नहीं सकतीं

आवेग है मुझमें और शीतलता, सागर जैसी गहराई,
विपदा चाहे कितनी हो, भ्रमित मुझे नहीं कर सकती

क्षणभंगुर विवशताएँ मुझको रोक नहीं सकतीं,
कितनी भी हो कठिनाई, रस्ता टोक नहीं सकतीं।

अनुभवों का मनश्चीरण: रचयिता

यह कविता भाग्य (Destiny) के भ्रम को तोड़कर **व्यक्तिगत सामर्थ्य** को स्थापित करने वाली रचना है।

विकल्प और परिधि: जिसे हम 'प्रारब्ध' (भाग्य) मानकर स्वीकार कर लेते हैं, वह अक्सर हमारे ही 'संचित' निर्णयों का परिणाम होता है। हम अपनी सीमाओं (परिधि) के रचयिता स्वयं हैं। जीवन में जो 'अल्प' (Minimal) या थोड़ा है, वह हमारे ही चुने हुए विकल्पों का दर्पण है।

अवलोकन और उदय: आत्म-सुधार की यात्रा 'अवलोकन' (Observation) से शुरू होती है और 'अंतर्दृष्टि' (Insight) उसे आगे ले जाने का माध्यम बनती है। सबसे महत्वपूर्ण बोध यह है कि हम अपनी दुविधा और संशय को अक्सर 'विनय' (Humility) समझ लेते हैं, जबकि वह केवल हमारी 'कमज़ोरी' होती है।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
प्रचुर	पर्याप्त मात्रा	Abundant
किंचित	बहुत थोड़ा	Slight
संचित	संकलित कर्म	Accumulated
अनुगूँज	आंतरिक प्रतिध्वनि	Resonance
अंतर्ध्वनि	भीतर की आवाज़	Inner echo
प्रणय	प्रेम-बोध	Love

रचयिता

गर प्रचुर नहीं है, किंचित है
प्रारब्ध नहीं है, संचित है

थोड़ा, ज़रा सा, जो अल्प है
तेरा बनाया विकल्प है

तेरी परिधि का तू रचयिता है
अपने मंच का अभिनेता है

अवलोकन ही पहला आवाहन है
अंतर्दृष्टि केवल इक वाहन है

अनुगूँज, अभिव्यक्ति क्या हो सकती है
काँटों जैसी चुभने वाली—अंतर्ध्वनि हो सकती है

इसका किसी को श्रेय नहीं है
यह पश्चाताप का विषय नहीं है

शाश्वत जिसको तू जान रहा है
भ्रम है कोई, प्रणय नहीं है

उदय भीतर खुद को करना होगा
तुझको काँटों पे चलना होगा

संशय जिसको जान रहा तू
कमज़ोरी है, विनय नहीं है

व्यतिरेक

यह कविता जीवन के विरोधाभासों और 'स्व' (Self) के प्रतिबिंब का एक काव्यात्मक विश्लेषण है।

सांकेतिक जीवन: जीवन कोई सीधी लकीर नहीं, बल्कि 'व्यतिरेक' (Contrast) और 'प्रतीकवाद' (Symbolism) का एक नृत्य है। परिवर्तन के नियम जटिल लग सकते हैं, पर वे प्रकृति के छंद की तरह सहज हैं। लेखक यहाँ केवल एक माध्यम है, जो शब्दों के ज़रिए आपके सामने एक 'दर्पण' रख रहा है।

प्रतिबिंब की शक्ति: जब हम किसी रचना में खुद को खोज पाते हैं, तो वह केवल कवि की कला नहीं, बल्कि हमारे अपने अस्तित्व की गूँज होती है। हम सब एक-दूसरे से अलग होकर भी एक ही 'प्राकृतिक छंद' का हिस्सा हैं।

शब्द(हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
व्यतिरेक	विरोध से अर्थ स्पष्ट	Contrast
उपमा	तुलना द्वारा समझाना	Simile
अनुप्रास	समान ध्वनि-प्रयोग	Alliteration
छंद	लयबद्ध संरचना	Metre
प्राकृतिक	स्वभावजन्य	Natural
प्रतीकवाद	संकेतों से अभिव्यक्ति	Symbolism

व्यतिरेक

व्यतिरेक है जीवन मेरा,
उपमा में समझाता हूँ,

परिवर्तन के सिद्धांतों को,
सहज करके बताता हूँ।

अनुप्रास सी बातें मेरी, प्राकृतिक छंद है मानव का,
प्रतीकवाद है जीवन मेरा, नृत्य वही दोहराता हूँ।

तुम भी मुझ-से ही दिखते हो, दर्पण बस दिखलाता हूँ,
व्यतिरेक है जीवन मेरा, उपमा में समझाता हूँ।

वस्त्र

यह कविता सामाजिक प्रदर्शन और स्वयं से बढ़ती दूरी का एक मर्मस्पर्शी विश्लेषण है।

अनुकूलन का खेल: हम अक्सर दूसरों की अपेक्षाओं के अनुरूप अपने 'वस्त्र' (व्यवहार और व्यक्तित्व) सिल लेते हैं। हर रिश्ते के लिए एक अलग 'जोड़ा' या मुखौटा तैयार है। बाहरी दुनिया को खुश करने की इस प्रक्रिया में हम इतने 'सज' जाते हैं कि हमारी अपनी मौलिकता इन परतों के नीचे दब जाती है।

आंतरिक सीमा: असली बंधन बाहर नहीं, हमारे भीतर है। हम अतिथियों (बाहरी दुनिया) को पहचानने में इतने व्यस्त हैं कि खुद को देखने और समझने का समय ही नहीं बचा। क्या ये रिश्ते हमें जोड़ रहे हैं, या हमें खुद से ही दूर कर रहे हैं?

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
अतरंगी	असामान्य, अलग	Eccentric
प्रतिबिंब	आंतरिक झलक	Reflection
अनुकरण	नकल करना	Imitation

वस्त्र

कुछ लोग जो मिलने आए हैं
मैंने भी वस्त्र सिलाए हैं

कुछ सादे हैं, कुछ सतरंगी
कुछ गहरे हैं, कुछ अतरंगी

हर रिश्ते का प्रतिबिंब 'एक जोड़ा' है
सब झूठे रिश्ते निभाए हैं,

अतिथियों के अनुकरण में
हम सब सज के आए हैं

सीमा-बंधन अपने भीतर है
क्या खुद को देख भी पाए हैं?

कुछ लोग जो मिलने आए हैं
मैंने भी वस्त्र सिलाए हैं

अनुभवों का मनश्चीरण: जीवन के चार चरण

यह कविता जीवन के चार पड़ावों के माध्यम से **चेतना की परिपक्वता** का मानचित्र है।

अपूर्णता से स्पष्टता: बचपन की श्रेष्ठता 'बोध' (Realization) के बिना अधूरी है और बुढ़ापे की स्पष्टता 'आवेग' के बिना शांत है। यह रस्ता एक क्रमिक विकास है, जहाँ हम खोते कम हैं और पाते ज़्यादा हैं। हर पड़ाव अपनी एक कमी के साथ आता है, ताकि हम अगले पड़ाव की ज़रूरत को समझ सकें।

मध्य-वय का ठहराव: जीवन का तीसरा चरण सबसे जटिल है—एक 'द्वंद्ववाद'। यहाँ संघर्ष है, तर्क है, पर अक्सर वह स्वीकृति (अनुमोद) नहीं होती जो हमें सुकून दे सके। अंततः, चौथे चरण में 'शम्बरी' (स्पष्टता) का उदय हमें कड़वे सच को भी सहजता से स्वीकार करने की शक्ति देता है।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
चरण	जीवन की अवस्था	Phase
बाल-अवस्था	बचपन की अवस्था	Childhood
बोध	आत्म-जागरूकता	Awareness
रोध	अवरोध, रोक	Obstruction
मध्य-वयस्क	मध्य आयु अवस्था	Middle age
द्वंद्ववाद	आंतरिक संघर्ष	Inner conflict
अनुमोद	स्वीकृति	Acceptance
शम्बरी	सत्य का आवरण हटना	Revelation
कटु	कड़वा सत्य	Bitter

चार चरण में पूरा होगा,
मेरा रस्ता अच्छा है,
चौथा थोड़ा मुश्किल होगा,
तीसरा थोड़ा टेढ़ा है।
पहले दो का क्या ही कहना,
वो सबसे अच्छा है।

बाल-अवस्था श्रेष्ठ है सबसे,
लेकिन उसमें 'बोध' नहीं,
यौवन इतनी जल्दी बीता,
लेकिन कोई 'रोध' नहीं।
मध्य-वयस्क द्वंद्ववाद है,
लेकिन जड़ का 'अनुमोद' नहीं,

चौथे चरण में सब 'स्पष्ट' है,
लेकिन अब पहले सा 'क्रोध' नहीं।
'शम्बरी' जब स्पष्ट हुई तो,
'कटु' सहज सा जँचता है,

चार चरण में पूरा होगा,
मेरा रस्ता अच्छा है।

अनुभवों का मनश्चीरण: संवाद (The Dialogue)

यह रचना सृजन की प्रक्रिया का एक 'मेटा-विश्लेषण' (Meta-analysis) है, जहाँ कवि अपने ही द्वंद्वों को पाठक के सामने स्वीकार करता है।

विरोधाभास और व्यंजना: कविता केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि मन के 'विरोधाभासों' (परस्पर विरोध/Paradox) को सुलझाने का एक माध्यम है। जब भावनाएं 'अमानवीय' (Inhuman) या जटिल होने लगती हैं, तो कवि 'मानवीकरण' (मानव-गुण देना) का सहारा लेकर उन्हें एक बोधगम्य रूप (व्यंजना) देता है। यह मन की उलझनों को शब्दों के सुपुर्द (समर्पित) करने की प्रक्रिया है।

मौन की ध्वनि: असली कविता शब्दों के बीच के 'मौन' (Silent) में बसती है। जिसे हम 'शब्दों की क्रीड़ा' (खेल) समझते हैं, वह वास्तव में सूक्ष्म-प्रतीकों के जरिए मन के उस कोने को टटोलने की कोशिश है जहाँ 'मौन-ध्वनि' गूँजती है। यह दृष्टि-भेद (Perception) को मिटाकर एक नई अंतर्दृष्टि (Insight) देने का प्रयास है।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
मानस-चित्रण	मन का चित्रण	Psychological portrayal
छंदनुमा	लयात्मक स्वरूप	Rhythmic
अभिव्यक्त	स्पष्ट रूप देना	Articulate
वृत्ति	स्वभाव, प्रवृत्ति	Disposition
व्यंजना	संकेतात्मक अर्थ	Suggestion
अन्तर्ध्वनि	भीतर की आवाज़	Inner resonance
सूक्ष्म-प्रतीक	गूढ़ संकेत	Subtle symbol

मानस-चित्रण

छंदनुमा गति से कुछ व्यक्त समक्ष मैं करता हूँ,
मन में एक विरोधाभास है, अभिव्यक्त आप से करता हूँ।

कुछ अमानवीय सी वृत्ति से, उत्पन्न हुए हैं दृष्टि-भेद,
मानवीकरण सा चित्रण करके—एक व्यंजना सुपुर्द आपके करता हूँ।

मानस-चित्रण की अन्तर्ध्वनि, मौन-ध्वनि में प्रकट मैं करता हूँ,
मन में एक विरोधाभास है, अभिव्यक्त आप से करता हूँ।

सूक्ष्म-प्रतीक है यह कविता मेरी, क्रीड़ा शब्दों की करता हूँ,
मन में एक विरोधाभास है, अभिव्यक्त आप से करता हूँ।

अनुभवों का मनश्चीरण: अभिव्यक्ति (The Expression)

यह कविता शब्दों के माध्यम से हमारे **अवचेतन (Subconscious)** की परतों को खोलने का एक प्रयास है।

शब्दों का मनोविज्ञान: मुख से निकला हर शब्द हमारे मन के 'क्रम-विकास' (Evolution) का प्रमाण है। हम अपनी वाणी से चाहे जो भी छिपाने का प्रयास करें, सुनने वाला अक्सर शब्दों के पीछे छिपे 'सत्य' तक पहुँच ही जाता है। अभिव्यक्ति केवल सूचना नहीं, बल्कि हमारे भीतर के प्रकाश का 'अपवर्तन' (Refraction) है।

नूतनता का भ्रम: संसार में कुछ भी नया नहीं है—सिर्फ़ भावों का अंतरण (Transfer of emotions) है। जिसे हम आज 'साधारण' मानते हैं, वह समय के साथ 'उत्कृष्ट' (श्रेष्ठ) बन जाता है। विपरीत परिस्थितियाँ और पक्ष-विपक्ष सब एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। असली चुनौती यह है कि हम कुंठित (दबा हुआ / Repressed) मन और अशुभ घड़ी में अपनी वाणी के प्रति सजग रहें।

शब्द (हिंदी)	**संक्षिप्त हिंदी अर्थ**	**English Meaning**
मुखारविंद	मुख, वाणी-स्थान	Mouth
खंडित	टूटा हुआ	Fragmented
प्रतिप्रसंग	संदर्भ-विरोध	Counter-context
नूतन	नया	Novel
अंतरण	भीतरी भिन्नता	Inner shift
निसर्ग	स्वाभाविक प्रकृति	Natural order
संरचना	आंतरिक बनावट	Structure

वाणी का क्रम-विकास

सहज बहुत है मुखारविंद से मन की बात का कह देना
लेकिन जब भी ऐसा करो तो ऐसा-वैसा कुछ मत कह देना

क्रम-विकास शब्दों का मन के गहरे भेद बताता है
कहने वाला कुछ भी बोले सुनने वाला सच तक जाता है

एक ही क्रम है, एक कतार है जिससे हर एक जाता है
रंग अलग बस दिखते हैं जब सूरज प्रकाश फैलाता है

खंडित वाणी 'प्रतिप्रसंग' है नूतन इसमें कुछ भी नहीं
अंतरण केवल भाव मात्र है नूतन इसमें कुछ भी नहीं

साधु-असाधु मात्र निसर्ग है सब संरचनाएं बस अपने भीतर हैं
साधारण जो आज है कल उत्कृष्ट कहलाता है

विपरीत-सपक्ष सब एक हैं दोनों बस मन को अपने कह देना
कुंठित मन हो, अशुभ घड़ी हो बस ऐसा मन को कह देना

सहज नहीं हो उस पल में लेकिन समय हमें सिखाता है,
क्रम-विकास शब्दों का मन के गहरे भेद बताता है।

भाग – २ :
अक्स

मेरी कमज़ोरी को सहारा न मिले
जा—तेरे ग़म की कश्ती को भी कोई किनारा न मिले।

तू बेवजह मुझे याद करती रहे,
और मुझे भी तुझसे मिलने की कोई वजह न मिले।

तू मुझे देखकर अनदेखा कर दे,
और मुझे भी तू थोड़ी अजनबी-सी लगे।

अगर भूलने में लगनी है एक उम्र-ए-दराज़
ख़ुदा करे ताउम्र, अब दिल न लगे।

बड़े दिलकश हैं अपनी जवानी के किस्से
दो ग़म मेरे हिस्से, और दो ग़म तेरे हिस्से

चलो बना लिया तेरा ग़म अपना ज़रिया
चाहे मेरे हों या तेरे ग़म
ये भी मेरे हिस्से, वो भी मेरे हिस्से

हम तड़पें, तिलमिलाएं, रोएं, टूटें या मर ही जाएं
बदनाम रहें या गुमनाम रहें, किसी का चाँद बनें या खो ही जाएं
हर दिल में धड़कें या सन्नाटे से चुप हो जाएं,

तेरा ज़िक्र हो,
बस 'उसके' नाम के साथ न हो
... जब दुनिया में चाहत के किस्से दोहराए जाएं।

अच्छी बातें करते हो
थोड़ा सादा दिखते हो

खुद को छुपाना चाहते हो
इसलिए थोड़े 'ज़्यादा' दिखते हो

खामोश रहते हो
बड़ा सोच के कहते हो

शायद कुछ कहना है
क्या इसलिए खामोश-से दिखते हो?

हर बात पे कहते हो, 'कोई बात नहीं है'
गर कोई बात नहीं है, तो किस बात से बचते हो?

मैं देख रहा हूँ, तुम खोये-खोये हो... तुम खोये-खोये हो
और मैं देख रहा हूँ, तुम बीच में हो सबके, लेकिन अलग-से दिखते हो

तुम इतने प्यारे हो, गर झूठ भी बोलो तो— मैं मान ही लूँगा
'ऐश', तुम सच ही लिखते हो।

बड़े 'काबिल' हैं मेरे दोस्त, मुझे समझाने वाले
आएंगे कभी दिन भी, इन्हें आज़माने वाले

मैं हाथ उठाऊँगा और दुआ कबूल होगी
देखते रह जाएंगे मुझे, 'खुदा के सजदे' करने वाले

ज़िंदगी की राह सीधी इतनी भी नहीं है 'ऐश',
पाएंगे मंज़िलें एक दिन, इन टेढ़े रास्तों से गुज़रने वाले

वो सोच रहे थे—मेरे आने से 'बढ़ा' क्या है, 'घटा' क्या है
और हम थे, कि कर चुके थे, कासा भी उनके हवाले।

मेरे प्यार में तुम खो सकती हो?
सच कह के बता दो, क्या मेरी हो सकती हो?

मैंने कुछ पैसे जोड़ के,
दीवारें बनाई हैं, तुम तस्वीर लगा के अपनी
इसे 'घर' कर सकती हो?

मैं चाँद की डोली लाऊँगा सोने से सजा के
तुम एक और बरस मेरा यकीन कर सकती हो?

मैं रोज़ तुम्हारे लिए घर जल्दी आऊँगा,
क्या हर सुबह तुम मेरे साथ, 'ब्रेकफास्ट' कर सकती हो?

ऊँची बातें करते हो, फिर क्यों 'छोटे' दिखते हो?
लगता है दिल-विल नहीं जानते, बस दिमाग से 'राब्ता' रखते हो

इस शहर के अमीरों में तुम्हारा भी नाम है, अच्छा ये बताओ कि तुम,
किस-किस से हिसाब रखते हो?

तुम्हारे घर की दीवारों पे, चमकीले 'शो-पीस' बहुत हैं,
ये बताओ, घर के किसी कोने में—क्या कभी कोई किताब रखते हो?

वो जो मिलने के लिए,
इस शहर की खाक छानता है

उसको जाके कह दो
कि मेरे घर का पता हर शख्स जानता है

किसी 'किताब वाले' से पूछ ले
कि यहाँ 'पागल' कौन है?

वो घर तक छोड़ आएगा
वो मेरा पता जानता है

एक ही शख्स है इस शहर में
जो रोज़ नई किताब माँगता है,

एक ही शख्स है जो किताबों को
'खुदा' मानता है

वो कुछ बात, ऐसे बयां करते हैं
जैसे हमें 'कम-समझ' समझते हैं

हमने देखे हैं, बदलती हुई हवाओं के दौर
जिसको वो अपना 'यकीन' समझते हैं
हम 'ना-तजुर्बेकारी' समझते हैं

कुछ दोस्त हैं, जो उन्हें ना-पसंद हैं
एक हम हैं—जो दुश्मन को भी 'आईना' समझते हैं

वो नींद से जागें, तो देख पाएंगे, जिन्हें वो 'होश-शुदा' समझते हैं
हम उन्हें 'ख्वाब' में घिरा समझते हैं

मोबाइल पे चल जाता है खुद ही मेरा हाथ
जब देख लेता हूँ दो परिंदे कभी साथ-साथ

परवाने को जलना है, यह परवाना नहीं कहता
राह में ज़रूरी नहीं, हर हाथ में हाथ

सिर्फ़ रंगों के बिखरने से तस्वीर नहीं बनती
सिर्फ़ 'साथ' नहीं काफी, अगर उसमें न हों जज़्बात

मैं दिन में घर को लौट आऊँ, यह मुमकिन तो है
सोच के डरता हूँ, कैसे गुज़ारूँगा यहाँ रात

तुम्हारी भी कुछ तो, मजबूरियाँ होंगी
वरना इतनी बे-रुखी से नहीं छूटता यह साथ

तुम साथ रहे बहुत देर, मैं सोचता रहा
क्या हो भी सकती है कभी, इस दिल से दिल की बात

आप बात करें और जीत भी जाएं
हम हार चुके हों और बता न पाएं

जवाब आपका, मेरा सवाल नहीं था
बुरा था आपसे पहले भी मगर
इतना बुरा हाल नहीं था

मैं जो ढूँढ रहा हूँ, वो 'सबक' नहीं है
माना तुम्हारा लहज़ा इतना भी सख़्त नहीं है

हम टूट गए हैं, यह कैसे बताएं
करना हो दिल हल्का, तो कहाँ जाएं

बड़ी नहीं हैं ख्वाहिशें, बस इतना कहना चाहता हूँ
कि रख के कंधे पे हाथ कमज़ोरियाँ न गिनाएं

प्यार अंधा हो, यह ज़रूरी भी नहीं है
मेरी आँखों में देखें, मुमकिन है समझ पाएं

आप सहारा हैं मेरा, मेरी कमज़ोरी न बनें
कैसा भी हो वक़्त, आप मुझको, देखें तो बस मुस्कुराएं
कहीं ऐसा न हो कि आप, यह 'जंग' तो जीत लें
(मगर) यह हारा हुआ साथी, फिर महफ़िल में न पाएं

एक कॉफ़ी, एक सिगरेट, और उस पर तुम्हारी यादों का जमघट

एक ग़ज़ल, एक प्याला, और ख़ामोशी में, दिल पर तुम्हारी दस्तक

क़लम हाथ में लेकर, मैं तुम्हारा नाम लिख रहा था,

सुनने वालों को लगी— मीर-ए-सुख़न, इक़बाल-ए-ख़ुदी, बारिश की बूँदें... या मेरे

दिल की आहट

कॉफ़ी, सिगरेट, ग़ज़ल, प्याला—सब साथ हैं अब भी, अगर कुछ साथ नहीं है— तो तेरा हँसकर मिलना, पहले-सी मोहब्बत, वो पहली-सी चाहत।

हम 'सुख़न' पहले भी करते थे, सरे-आम नहीं करते थे, अब हमें यह भी गवारा है— किसी 'फूल' से ज़्यादा, 'गुलदस्ते की बनावट'।

'यार' तुम नहीं बने इस ज़माने के लिए,
कुछ दोस्त आए यह समझाने के लिए।

मैंने भी मुस्कुरा के, तीन जाम बना दिए,
और एक और भर लिया प्याला, उनका साथ निभाने के लिए।

एक पी के बोला—कुछ कहना चाहता हूँ, एक बात है दिल में, तुझे बताने के लिए।
"न जाने क्यों लाए हैं तेरी महफ़िल में मुझे, मैं छेड़ नहीं सकता तेरे ज़ख्म, दिल को बहलाने के लिए।

वो तेरा टूटना, सिसकना रातों को अकेले... हर आँसू नहीं होता, सबको दिखाने के लिए।
मैंने देखा है तेरा टूट के बिखरना ऐ दोस्त, किस हद से गुज़रता है कोई पागल, प्यार निभाने के लिए।

तेरे टूटे हुए हिस्से, मेरे घर में 'मुकम्मल' हैं, बहुत ज़रूरी है हर 'कतरा', इश्क़ को खुदा बनाने के लिए।
मैं लौट जाऊँगा, सुबह होने तलक 'ऐश', ये भी न होंगे यहाँ, तुझको समझाने के लिए।"

दीवानापन ज़रूरी है, दीवाने से मिलने के लिए, एक उलझन भी ज़रूरी है, ज़िंदगी सुलझाने के लिए।
हर शख़्स नहीं होता, हमसफ़र जैसा, हर दोस्त नहीं काबिल, दोस्त बनाने के लिए।

पहाड़ों में जब बरसात होती है,

हर ज़र्रे में कुछ ख़ास बात होती है।

आसमान में जब तारों की बारात होती है,

नदी किनारे जुगनुओं की सौगात होती है।

ज़िंदगी की पढ़ाई चलती रहती है, मुंडेर पे बैठे चचा से, बीड़ी पीते... जब बात होती है।

अब हम ज़िंदगी में किसी 'कल' का इंतज़ार नहीं करते, ज़िंदगी हर पल हमारे साथ होती है।

तू दिल पे हाथ रख दे, तो यह महसूस हो जाए,
तेरा ग़म मुझको मिल जाए, तो आलम 'खूब' हो जाए।

पकड़ कर हाथ जो मेरा, तू मेरे साथ चल पाए,
मेरे जीने का हर मक़सद, बस 'मक़बूल' हो जाए।

लिखेंगे 'मीर' और 'ग़ालिब' के जैसे 'सुख़न' हम भी,
खुदाया! तू साथ हो मेरे, दुआ क़बूल हो जाए।

तेरी जुल्फों की जानिब, शेर एक हम भी सुनाएंगे,
ख्वाब बिखरे हुए मेरे, तेरी जुल्फ का फूल हो जाए।

वो मुझको देखे महफ़िल में, हँस कर बात बस कर ले,
फ़क़त ऐसी कोई एक दिन... उनसे ये 'भूल' हो जाए।

तुझसे मिलने की आस बची है,
इन आँखों में बरसात बची है।

अश्क़ों के इस दरिया में, जज़्बातों के सैलाब उठे,
नयनों की इन झीलों में, तेरी यादों की एक नाव बची है।

हमने भी दीये जलाए रखे, तूफानों की बस्ती में,
दिन सारे काली सियाही से हैं, रोशन अब भी एक रात बची है।

अब सन्नाटा है, ख़ामोशी है, ख़ामोशी के चर्चे हैं,
मुझको अब भी लगता है, तुझसे कहने वाली एक बात बची है।

सूख चुकी हैं आँखें तब भी, मिलने की एक आस बची है।
दिल में एक बरसात बची है, तुझसे मिलने की आस बची है।

आओ सैर कराता हूँ,
अपनी जागीर दिखाता हूँ,

लाइब्रेरी के एक कोने में,
अपनी किताब पढ़ाता हूँ।

13 क्लिष्ट हैं, 23 सादा, कुछ शायरियाँ भी सुनाता हूँ,
लाइब्रेरी के एक कोने में, अपनी किताब पढ़ाता हूँ।

मैनेजमेंट-सी बात नहीं है, फिलॉसफी का भी आघात नहीं है,
कुछ मीठे-कड़वे रिश्तों की, कड़वी-मीठी बात बाताता हूँ,
वो बातें याद दिलाता हूँ, आओ सैर कराता हूँ।

गाँठ तजुर्बों की खोल कर, कुछ रंग नए फैलाता हूँ,
कुछ ज़ख़्म पुराने कुरेदता हूँ, कुछ नए ज़ख़्म सहलाता हूँ,
लाइब्रेरी के एक कोने में, अपनी किताब पढ़ाता हूँ।

आओ सैर कराता हूँ, अपनी जागीर दिखाता हूँ।

मेरी उलझन का कोई छोर नहीं है,

वो सन्नाटा है जिसमें शोर नहीं है।

रास्ता है, मंज़िल नहीं,

हिम्मत अभी बाकी है, बस पुरज़ोर नहीं है।

उलझन, नासमझी नहीं है,

सीधी है बात, तूने समझी नहीं है।

हर जीतने वाला, जीता नहीं होता,

हर हारने वाला, कमज़ोर नहीं है।

पूरे-अधूरे कई जवाब, सवाल उनपे भी जो हैं अधूरे ख्वाब।

ये आँखें कर रही हैं इशारा किस तरफ?

इन आँखों का इशारा क्यों मेरी ओर नहीं है?

कहते हैं अक्सर ये ज़माने वाले,
हल्का महसूस करते हैं ग़म को बताने वाले।

हमने तो करी हैं कई बार खुदा से बातें,
ज़िक्र किए हैं कई बार हमने राज़ छुपाने वाले।

कई दोस्त मिले हैं, और मिले हैं कई चाहने वाले,
बस हम ही हैं कि तलाशते हैं, इस दिल को दुखाने वाले।

कई हमदर्द मिले हैं, और कई सुनने-सुनाने वाले,
हमने लेकिन सलीके से छुपा रखे हैं, तेरे राज़ सभी छुपाने वाले।

कुछ हमसफर हैं, कुछ हम-कदम भी हैं,
कुछ हम-प्याला हैं और कई हमको समझाने वाले,

हमने परखे हैं लोग इस ज़माने वाले,
दिल तोड़ने वाले, दिल को सताने वाले।

आधी भी कह न पाए,
उलझी-सी दिल की बात,
आधी बची है अब भी,
आधी रुकी-सी रात।

अधूरी-सी रह गई,
जो कहनी थी बात,
आधी कहेंगे मिलके,
आधी तेरे जाने के बाद।

आधी-सी ज़िंदगी में,
अधूरा-सा तेरा साथ,
आधी ही हसरतें,
अधूरी-सी यह मुलाक़ात।

आधी गुज़ारी पी के,
आधी यादों के साथ,
आधी चलीं ख्वाहिशें,
ता-उम्र मेरे साथ।

आधी खत्म हुई है,
आधी पीने के बाद,
आधी भी कह न पाए,
आधी रुकी-सी बात।

दिल को पुकारता है दिल—बस किसी शाम आकर मिल।
दिल-ए-ग़म ने बहुत रुलाया है दिल— बस किसी शाम आकर मिल।

मैं भूल जाऊँगा बातें पुरानी, मुस्कुरा लूँगा, जब सजेगी तेरी महफ़िल—
बस किसी शाम आकर मिल।

ला मेरे रक़ीब को संग ला, मुस्कुरा कर उससे बात कर।
दिल—हाँ, तोड़ दे मेरा दिल, **बस किसी शाम आकर मिल।**

सुना, तेरी जफ़ा क्या कहती है—सुना,
दिल पे चला हर तीर नया; न बचेगा यह दिल—
बस किसी शाम आकर मिल।

दामन छुड़ा, मेरी दोस्त न बन, क़ातिल है मेरे दिल की—भोली न बन।
ले मेरी तमन्ना, जीने वाली ले, मेरे हौसले की भी बन तू क़ातिल—
बस किसी शाम आकर मिल।

मोहब्बत की और सज़ा क्या है?
चाहते हैं तुझे, और गुनाह क्या है?

तुझे देखते हैं, खुद को भूल जाते हैं,
बता मोहब्बत में और इंतहा क्या है?

दर्द सीने में लिए, जिये जाते हैं,
हमसफ़र पाने की और सज़ा क्या है?

कुछ बातें हैं जो कह नहीं पाए,
न जाने क्या बात है, वजह क्या है?

लिखते हैं कभी, हाल-ए-दिल कह के सुनाते हैं,
दर्द के मारों को, महफ़िल में, और सज़ा क्या है?

तमन्नाएं प्यालों में **डूब गई** हैं,
बढ़कर इससे बता—नशा क्या है?

मरहम पूछता है, ज़ख्म देने के बाद,
इससे **बड़ा बता गुनाह क्या** है?

बाज़ी **खेलते हैं** हार जाने को,
परवाने को तो जलना है,
क्या पूछें वजह क्या है?

हम नहीं नाप-तौल के करेंगे सौदा,
तौल कर लिया तो **हल्का** ही जानो,
बोल कर **जो लिया,** तो मज़ा **क्या है**?

भाग – ३ :

दरिया – पंजाब की नदियों के प्रवाह को समर्पित

हत्थ विच कुल्हड़ दी 'चाह' होवे,
ज़िंदगी ऐवें निभा होवे।

हत्थ विच कुल्हड़ दी चाह होवे,
जे मेरा तेरे नाल ब्याह होवे।

जद चूल्हे विच मैं दो लकड़ पावां,
तेरी 'स्माइल' ते मैं मर जावां।

जद तू घर विच झांजर पा के तुर्रे,
हर पल तेरे ते मेरी निगाह होवे।

तू झगड़े पावे, मैं हँस देयां,
तेरे झूठे नखरे, मेरे जीने दी वजह होवे।

जेड़ा तेरे नाल न गुज़र सके,
ओ पल जिवें 'गुनाह' होवे।

जिन्ना मैं तैनू चान्हां बलिये,
तैनू वी उन्नी, मेरे नाल चाह होवे।

सुणया तैनू प्यार हो गया, यार तू बंदा बेकार हो गया।
आपां बंदे 'माड़े' रह गए, तेरा उच्चा 'मयार' हो गया।

सुणया तैनू प्यार हो गया,यार तू बंदा बेकार हो गया।

पहले अपने रस्ते 'कट्ठे' सी, हुण तेरा दूजा संसार हो गया।
पहले सांझे सी 'उधड़े कुर्ते', टुट्टी जुत्तियां...
हुण तेरा नवां, 'शृंगार' हो गया।

जेड़े शिकवे मिट्ठे लग्दे सी,हुण क्यों दिल दा गुबार हो गया?
उसदे हथ दा, हथियार हो गया —
उसदी गल्लां दा शिकार हो गया।
हुण तू बंदा बेकार हो गया।

पहले लग्दा सी अनमोल जेड़ा तैनू,रिश्ता अपना हुण 'व्यापार' हो गया।
हुण तू बंदा बेकार हो गया।

पहले तां लग्दा सी मैं तैनू सब कुछ,
हुण तेरा नवां 'परिवार' हो गया।
सुणया तैनू प्यार हो गया...
यार तू बंदा बेकार हो गया।

'मुटियार' मिली, 'दस्तार' गया...

वेबफा तेरा किरदार हो गया!

हुण तू बंदा बेकार हो गया।

चार परिंदे नाल बैठे सी,
गल्लां करदे 'वेल्ले' होके।

हथ पकड़ के, एक दूजे नू जकड़ के,
बैठे रहंदे सी सबतों 'कल्ले' होके।

गीत उसदे जद सुणदे होंदे सी,
लग्दा सी सानु, कोई ना टोके।

माड़ी-चंगी जिवें होवे,
ज़िंदगी अपनी गुज़ार लवांगे,
तेनु पाके, तेरे होके...

जाणे किस दी नज़र लग गयी,
दुनिया नू किवें खबर लग गई ?
प्यार जे मैंनू 'नज़र' होया सी,
तैनू पा के, खुद नू खो के।

भाग – ४ :
कतरा – कतरा – बिखरी हुई यादें

मारे गए हैं, कातिल को जानते नहीं,

कहने को जो अपने हैं, हमें पहचानते नहीं।

नीली आँखें, मेहंदी का रंग, सोने की बाली और दिल का लहू

हैं इस शायरी में, सब के रंग, जिन्हें वो पहचानते नहीं।

कई रातों से हम सोए नहीं हैं,

इतने बदल गए हैं खुद को पहचानते नहीं।

कई रंग उभर आए हैं, इन आँखों में अजब से,

तस्वीर क्या दिखने वाली है, पहचानते नहीं।

कुछ कतरा लहू, आंसुओं में मिला के, बड़ी शिद्दत से दवात बनाई है,

कलम हाथ में जब लेंगे, क्या लिखेंगे जानते नहीं।

तेरे लहंगे का रंग, बालों में छुपे झुमके
और उस पे दबी-दबी सी मुस्कुराहट तेरी।
यार कैसी हो रही है हालत ये सब देख कर मेरी ॥

रात भर बातें करना और देखना छुपके तस्वीर तेरी।
कुछ ऐसे गुज़र रही है, आजकल ये जिंदगी मेरी ॥

हर पल फोन चेक करना, तुम से प्यार करने से डरना।
दिल में उलझनें बेनाम रिश्ते की, पड़ रहा है भारी तेरे प्यार में पड़ना ॥

ये बेचैनी रात भर, ये बिन वजह तड़पना।
ये तुझ से बात करके, मेरे हालात बिगड़ना ॥

दोस्तों से झूठ कहना, कोई बात नहीं है।
वो दोस्तों का मेरे, दबे जज़्बात पढ़ना ॥

बहुत मंहगा पड़ेगा हमें, तुझ से बातें करना,
तेरे इश्क में पड़ना।
ये शेर जब तुझे पढ़ के सुनाऊं,
बात चाहे कैसी भी लगे, बस मेरी बातों पे न बिगड़ना।

तुम ढूंढ ही लोगी किसी को, और हम भी सीख जाएंगे।
सर्द रातों में अकेले, करवट बदल के सोना, अकेले बिस्तर में सिकुड़ना।।

उन आँखों को देखूं तो जान लेता हूँ
दिन कैसा गुजरा होगा पहचान लेता हूँ

वो गुस्से से बोले ‘तुम्हारा दिमाग खराब है?’
मुस्कुराता हूँ, बात मान लेता हूँ

परेशानियाँ छुपाए अपना हाल भी न बताए
उसकी आंखों में जो छुपा है, सब देख लेता हूँ

उसके टूटे हुए सपने जब बिखरने लगते हैं
हाथ बढ़ाता हूँ समेट लेता हूँ

वो नजरें छुपाए चाहे न भी बताए
चाहे कितना छुपाना चाहे
सब देख लेता हूँ

जब लोग तुमसे कहने लगें बातें न कहने वाली
जब सुनने लगें तुम्हें आहटें तन्हाई वाली

तुम खोये-खोये मत रहना बीती-बिसरी बातों में
पुराने मैसेज मत पढ़ना, तन्हा अकेली रातों में

मेरे प्यार को अगर भुलाना नामुमकिन हो
कोई नया रिश्ता बनाना नामुमकिन हो

नामुमकिन हो मुझसे बातें करना
कोई ज़िद कोई शिकायत करना,
न बटुआ छुपाना न चाबी गुमाना
न प्रेस करते हुए मेरी शर्ट जलाना
मुझे रोकने का कोई बहाना नामुमकिन हो

तुम आवाज़ लगाओ और मेरा लौट आना नामुमकिन हो

तुम किताब एक पढ़ना, दिल को बहलाने वाली
बीती हुई बातें याद दिलाने वाली

"नाम क्या लिखोगे", नाम से कहलाने वाली
फिर मेरी याद दिलाने वाली
सन्नाटे में एक आहट दोहराने वाली]

वक्त लंगड़ा के चल रहा है,
खामोशी चिल्ला रही है।

ये आँखें बुझी हैं,
लेकिन रास्ता दिखा रही हैं।

मैं साहिल पे डूबा-डूबा सोचता हूँ,
गर मिटना है किनारे पे,क्यों नदियाँ लहरें उठा रही हैं?

अँधेरे में दिख रही है रोशनी सरबसर,
लगता है तू कहीं पर्दा गिरा रही है।

नींद से जगा कर कुछ कह रही है,
एक ये याद है पुरानी,जो हमको सता रही है।

दिल-ए-फ़ुग़ाँ क्या कहती है हमको यह मालूम नहीं

हम जैसे मतवालों का यह रोज़ ख़सारा होता है
हम दिल देके बस रोते हैं यही हाल हमारा होता है

अजनबियों के मानिंद कहीं तुम तन्हा तन्हा रोते हो
कही थी तुमने जो हँस कर बातें बस उसका सहारा होता है

जो जी चाहे करते हैं अब हमको कोई रोक नहीं,
शाम हुई - दो जाम चले, कुछ ऐसे गुज़ारा होता है

तेरी याद में नज़रें बोझिल हैं, नज़रें पानी-पानी हैं
इस नदी पे कोई बांध नहीं न कोई किनारा होता है

कुछ विशेष शब्दों के अर्थ:

□ **दिल-ए-फ़ुग़ाँ:** रोता हुआ या दुखी दिल (Wailing heart)

□ **ख़सारा:** नुकसान या घाटा (Loss)

□ **मानिंद:** की तरह (Like/Similar to)

□ **बोझिल:** भारी (Heavy)

इस शोर में क्या सन्नाटा सुनाई दे रहा है ?
इन किताबों में कहीं मेरा कलाम, दिखाई दे रहा है ?

बढ़ तो रहे हो तुम इस तेज हवा के साथ
क्या रास्ता कहीं कोई तुम्हें, दिखाई दे रहा है ?

जोशो-जुनू में तुम चीख तो बहुत रहे हो
इन आवाजों में क्या अंदर का शोर, सुनाई दे रहा है ?

दिखा तो रही है दुनिया रंग तुम्हें कई-कई
क्या दुनिया का रंग तुम्हें भी, दिखाई दे रहा है ?

पृष्ठभूमि अपने भीतर है, शंखनाद तुम्हारा है — इसकी गूँज से जाग उठा,
वही उत्कृष्ट कहलाता है।

दुर्योधन अपने भीतर का जब अनाहक लोभ दिखलाता है,
क्षीण होती है दृष्टि तब-तब, जब मोह जाल फैलाता है।

गंगा का जल बाँधने (भीष्म) वाला, ज़िद अपनी न बाँध सका,
द्रोण (द्रोणाचार्य) सहज ही आँखें मूँदे, मुख को फेरता जाता है।

मैत्री जब श्रेष्ठ–ज्येष्ठ (कर्ण) को मर्यादा से प्यारी लगे,
शम्बरी हुआ धनुर्धर तब प्रत्यंचा चढ़ा न पाता है।

नीति का वाहक (विदुर), रीति का वाहक बन, पीछे छिपकर बैठा हो,
अंतर-दृष्टि से संजय भी तब भीतर सच देख न पाता है।

दैवी संपत्ति (पांडव) जब असुरों के आगे घुटने टेकें,
पाञ्चजन्य जब बज न सके, दुस्साहस दुर्योधन बन जाता है।

यह नकुल–सहदेव की बात नहीं, यह चीर तुम्हारे भीतर है,
कुरुक्षेत्र अपने अंदर का ललकार तुम्हें बुलाता है।

बनो सारथी, करो सुदर्शन, युद्ध जो जीतने वाले हैं,
जो नहीं लड़ा, बस देख खड़ा— कायर वही कहलाता है।

युद्ध में जीत सुनिश्चित हो, यह मर्यादा की शर्त नहीं,
युद्ध में लड़ने वाला हर एक, हारा हो या जीता हो,
श्रेष्ठ गति को पाता है— योद्धा वही कहलाता है।

उठो सारथी, राह दिखाओ, तुम चुप बैठ नहीं सकते,
इतिहास हमारा चिर-परिचित है, हर युग में यह दोहराता है।

तन से इंद्रियों परे है, लेकिन इंद्रियों से परे है आत्मज्ञान,
भावावेश में रहने वाला व्यर्थ जीवन कहलाता है।

अभिमन्यु सौ पर भारी है, चाहे युग-युग जी न सका,
वीर-गति को पा कर भी वह चिरंजीवी कहलाता है— वह चिरंजीवी
कहलाता है।

वैसे इसमें कोई ऐसी वजह नहीं थी।

मैंने बस तस्वीर दिखाई थी,

बरसों पुराना किस्सा था।

जाने क्यों आँख भर आई थी,

इस बात पर गुस्सा ठीक नहीं,

इस बात से बात का बिगड़ना क्या?

इस बात में कोई बात क्या,

बात जो मैंने बताई थी?

रुको, मुझे क्यों लगा ऐसा, यह सिर्फ ज़रा सी बात नहीं,

इस बात में कोई बात है क्या

... जो तुमने हमसे छुपाई थी।

एक ग़ज़ल अब तक नहीं पढ़ी मैंने,
एक ग़ज़ल है जो अधूरी है।

तू भी गुम है शायद, मैं भी खो गया हूँ,
क्यों कह नहीं सकते, जाने क्या मजबूरी है।

तेरी ख़ामोश सी करीबी,
गुमनाम सी जो दूरी है।

आधी पढ़ी ग़ज़ल सी,
यह दास्ताँ अधूरी है।

खुदा को भी नहीं इजाज़त
इसको सुकून दे,
मुकम्मल किताब होने को,
...यह दर्द भी ज़रूरी है।

भाग – ५ :
छोटी – छोटी बातें।

- कुछ लाशें हैं इस शहर में, जो साँस लेती हैं,
  ये ख़ामोशी उनके 'ना-होने' की खबर देती है।

- लिख सकते हैं कुछ ख्याल, हम 'ख्याल' की तरह,
  ज़िंदगी देख रही है, आँखों में जैसे - 'सवाल' की तरह।

- चार शेर लिखे हैं, बड़े तपाक से लिखे हैं,
  कुछ ख्याल हैं जो बेबाक-से लिखे हैं।
  हमने गुज़ारी हैं, हिज्र में कई रातें,
  जो बहते थे कतरा-कतरा, वो जज़्बात लिखे हैं।

- वो जवाब माँगते हैं, सवाल जानते नहीं,
  दवा की आरज़ू है, ज़ख़्म पहचानते नहीं।

- यार तुम जो खामोश बैठे हो, क्या तुम दिल देके बैठे हो
  कुछ गलियाँ इस शहर में बड़ी तंग हैं जनाब़
  लगता है उन गलियों में दिल खोके बैठे हो।

- कहाँ-कहाँ किये झूठे शिकवे उसने , पूछा किसी ने हिसाब तो ज़ख़्म छुपा लिए मैंने
  दुश्मनी का सलीका सिखा दिया मैंने, ज़ख़्म जब भी दिया उसने, मुस्कुरा दिया मैंने

- मेरी कहानियों किस्सों में है हिस्सा तेरे नाम का कहीं
  ज़रा रुक कह रह गयी है ये धड़कन वहीं कहीं
  सच यूँ भी है के कायनात क़दमों में है मेरे
  सच ये भी है के रेत सी ज़िंदगी मेरी मुट्ठी में ही नहीं
  मेरी नज़्मों में कुछ अशआर तेरे नाम से जुड़े हैं
  तेरे गीतों में भी तो होगा, मेरा ज़िक्र कहीं कहीं

- इस फ़िज़ा का रंग बदलना चाहिए,
  इस अदब का ढंग बदलना चाहिए,
  मैंने सोचा बहुत के हल निकलें यहीं से,
  पर अब लगता है अपना भी तेवर बदलना चाहिए

- मेरी ज़िंदगी में यारों कुछ ऐसा भी दौर था
  खुद का उठा जनाज़ा मैं समझा कोई और था

- मोहब्बत, इबादत, सनम, ख़ुदा कुछ भी नहीं है
  तू एक आदत सी पड़ गयी है, बस उसका नशा है तू

GenZ - **संवाद**

For Tiya, Adi, and Piku यह कविता explain करने के लिए नहीं, relate करने के लिए है। Gen-Z संवाद—unfiltered and felt.
आइए, साथ मिलकर पढ़ें और लिखें।

यार थोड़ा Glow up (self-improve) कर
तू CEO (master) है इस Fam (close circle) का — E-boy (internet cool guy) बन, Ghosting (suddenly ignore) ना कर

Salty (jealous) रहने दे Energy Vampires (emotion drainers) को
Narcs (narcissists) को अपनी headache (problem) ना कर

Pick-Me (attention seeker) वाले Fake Nice (sweet on surface, fake inside) को
Drag (publicly roast) कर, bas Dip (Leave to avoid) ना कर

Drip (style) तेरा, Boujee (luxury class) है यार
Sip tea (observe drama quietly) कर, Rent-free (obsess mentally) वाला trip ना कर

Funzies (for fun) तेरी Vibe (energy) है darling

Cringe (painfully awkward) वाला Finesse (fake smart move) ना कर

चल अब get-up and Hit me up (contact me)

Tap in (connect now) कर, बस देर ना कर

Note_______